eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 1, Issue 01, Jan 2018

प्रतिरोध, क्रान्ति और निराला

[1]डॉ0 मंजुला यादव
[1]एसोसिएट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, नवयुग कन्या महाविद्यालय, राजेन्द्र नगर, लखनऊ

Received: 01 Jan 2018, Accepted: 15 Jan 2018 ; Published on line: 31 Jan 2018

Abstract

''दुःख ही जीवन की कथा रही,
क्या कहूँ आज, जो नहीं कहीं।''

महाप्राण निराला के काव्य में क्रान्ति व विद्रोह का स्वर सर्वाधिक मुखरित हुआ है। निराला क्रान्ति के अग्रदूत हैं। शक्ति के उपासक होने के कारण वे अन्याय को चुपचाप सहन नहीं कर सकते थे, उनका सारा जीवन सामाजिक रूढ़ियों, अन्धविश्वासों और मानवता के नाम पर कलंक लगाने वाली कुरीतियों पर प्रहार करते बीता। उन्होंने अपने जीवन में जितने संघर्ष झेले और आपदाओं की मार से जिस प्रकार उनका हृदय विदीर्ण हुआ, उतना सम्भवतः भारत के किसी अन्य महान साहित्यकार का न हुआ होगा। कबीर के उपरान्त उन्हें ही सबसे अधिक विरोधों का हलाहल पीना पड़ा था और इन्हीं सब कारणों से वे विद्रोह और क्रान्ति के कवि बने।

Keywords- महाप्राण निराला, इस्लामी प्रतिरोध, क्रान्ति व विद्रोह।

परिचय

निराला की रचना परिमल, गीतिका, अनामिका में कवि का जीवन मुख्यतः विद्रोह की ओर झुका हुआ दिखायी देता है। 'बादल–राग' नामक कविता में निराला की विप्लव और क्रान्ति भावना का सुन्दर व्यक्तिकरण हुआ है। इस कविता में बादल को कहीं विप्लव का, कहीं क्रान्ति का और कहीं आतंक का प्रतीक चित्रण किया गया हैः–

भय के मायामय आँगन पर ,
गरजो विप्लव के नव जलधर।
ग ग ग
ऐ त्रिलोक जित्! इन्द्र धनुर्धर
सुर बालाओं के सुख स्वागत
विजय, विश्व में नवजीवन भर
उतरो अपने रथ से भारत। [1]

प्रगति और प्रयोग की दिशा में निराला की रचना 'कुकुरमुत्ता' मील का पत्थर है। डॉ0 रामरतन भटनागर ने लिखा है कि ''निराला के छायावादी काव्य में जो स्थान 'जूही की कली' कविता का है, वही स्थान उनकी नई कविताओं में कुकुरमुत्ता को मिलना चाहिए।''[2]

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 1, Issue 01, Jan 2018

प्रो0 धनंजय वर्मा 'कुकुरमुत्ता' को निराला की सामाजिक चेतना, यथार्थ दृष्टि, प्रगतिशील विचारधारा और व्यंग्य कृति का परिणाम बताते हैं और कहते हैं कि ''इतना तो निश्चय के साथ कहा जा सकता है कि कुकुरमुत्ता के पीछे कोई साधारण काव्यात्मा कार्य नहीं करती, जितना तीव्र और मर्मभेदी उसका व्यंग्य है उतनी ही व्यापक उसकी दृष्टि है। उसके व्यंग्य का लक्ष्य एक नहीं अनेकोन्मुख हैं।''[3]

'कुकुरमुत्ता' में निराला का व्यंग्य एकमुखी न होकर बहुमुखी और बहुपक्षीय है। 'कुकुरमुत्ता' को निराला जी ने दीन–हीन शोषित जनता का प्रतीक माना है और गुलाब को शोषक अभिजात वर्ग का। कवि ने केवल पूँजीपति वर्ग के प्रतीक गुलाब को ही नहीं वरन् सर्वहारा वर्ग के कुकुरमुत्ता पर भी अपने व्यंग्य की चोट की है। डॉ0 रामविलास शर्मा ने लिखा है कि – ''कुकुरमुत्ता का व्यंग्य जहाँ गुलाब को मारता है, वहाँ खुद उसे भी हास्यास्पद बना देता है।''[4]

अबे, सुन बे, गुलाब
भूल मत जो पाई खुशबू, रंगो आब,
खून चूसा खाद का तूने अशिष्ट,
डाल पर इतराता है कैपिटलिस्ट!
कितनों को तूने बनाया है गुलाम
माली कर रखा, सहाया जाड़ा–घाम। [5]

क्रान्ति की बातें वहीं कर सकता है जिसने अपने जीवन में प्रत्यक्ष संघर्ष किया है। उनके काव्य में विद्रोह व क्रान्ति की जो जीवन्तता मिलती है अन्यत्र कहीं नहीं मिलती है। जैसे उनके जीवन का कड़ुवा सत्य इन पंक्तियों में अभिव्यक्त हुआ है। 'राम की शक्तिपूजा' में रावण सीता का हरण कर लेते हैं तो राम अपने आपको धिक्कारते हुए कह उठते हैं किः–

धिक जीवन को जो पाता ही आया विरोध,
धिक साधन जिसके लिए सदा ही किया शोध।
जानकी! हाय उद्धार प्रिया का हो न सका।
कह एक और मन रहा, राम का जो न थका। [6]

निराला के विद्रोही और क्रान्तिदर्शी स्वभाव का परिचय 'सरोजस्मृति' में यत्र–तत्र मिलता है। भाग्य की रेखाओं को बदलने का दुस्साहस रखने वाले इस अजेय योद्धा ने पुनर्विवाह न किया। रूढ़ियों के प्रति बगावत करते हुए वे 'सरोजस्मृति' में कहते हैं कि मैं भाग्य का भी विरोध करता हूँ। महाप्राण निराला के हाथों की लकीरों में दो विवाह का योग था किन्तु उन्होंने भाग्य के लेख को बदलने की ठानी और दूसरा विवाह नहीं कियाः–

पढ़ लिख हुए शुभ दो विवाह
हँसता था, मन में बड़ी चाह
खण्डित करने को भाग्य, अंक
देखा भविष्य के लिए अशंक
ग ग ग
कुण्डली दिखा बोला– 'ए लो'

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 1, Issue 01, Jan 2018

आई तू दिया, कहा, खेलो। [7]

निराला की यही क्रान्तिदर्शिता उनकी पुत्री सरोज के विवाह के अवसर पर भी दिखाई देती है। जातिगत रूढ़िवादिता के वे विरोधी थे। पुत्री सरोज के विवाह का निश्चय करने पर उन्होंने सोचाः–

ये कान्यकुब्ज–कुल–कुलाङ्गार
खाकर पत्तल में करे छेद
इनके कर कन्या, अर्थ खेद,
इस विषय बेलि में विष ही फल,
यह दग्ध मरुस्थल नहीं सुजल। [8]

लाडली पुत्री सरोज की असमय मृत्यु ने रही–सही कसर भी पूरी कर दी और कवि का आकुल अन्तर शत–शत खण्डों में विदीर्ण हो करुण क्रन्दन कर उठाः–

धन्ये मैं पिता निरर्थक था,
कुछ भी तेरे हित न कर सका। [9]

निराला का व्यक्तित्व इतना विराट है कि उसमें अनेक विरोधी गुणों और प्रवृत्तियों का समन्वय हुआ है। वे यदि अपनी पीड़ा को चुपचाप सहन करने में समर्थ हैं तो परपीड़ा से सहज ही विचलित होने वाले हैं। यदि स्वाभिमान की अतिशयता है तो निर्भकता का भी विशेष गुण है। इन्होंने समाज की अव्यवस्था तथा असमानता के जो चित्र–चित्रित किये हैं वे अत्यन्त भावपूर्ण एवं मर्मस्पर्शी हैं। भिक्षुक, विधवा रास्ते के फूल से, कण आदि कविताएँ इसी वर्ग के अन्तर्गत आती हैं। भिक्षुक का यह करुण चित्रः–

वह आता
दो टूक कलेजे के करता पछताता पथ पर आता
पेट–पीठ दोनों मिलकर हैं एक
चल रहा लकुटिया टेक
मुट्ठी भर दाने को भूख मिटाने को
मुँह फटी पुरानी झोली को फैलाता
दो टूक कलेजे के करता पछताता पथ पर आता। [10]

'तुलसीदास' कविता में रत्नावली का तुलसी के प्रति यह कथन बहुचर्चित हैः–

धिक! आये तुम यों अनाहूत
धो दिया श्रेष्ठ कुलधर्म धूत
राम के नहीं काम के पूत कहलाए।
हो बिके जहाँ तुम बिना दाम
वह हनीं और कुछ हाड़ चाम
कैसी शिक्षा, कैसे विराम पर आए। [11]

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 1, Issue 01, Jan 2018

यह सुनकर तुलसी के सोये संस्कार सहसा जाग उठते हैं और उनका जीवन मोह की राह को छोड़कर ज्ञान की राह पर बढ़ने लगता है। उद्देश्य की जटिलता और अवसर की मार्मिकता का यह भावप्रवण संयोग निराला जैसे समर्थ कवि की लेखनी द्वारा ही सम्भव था।

'राम की शक्तिपूजा' में वर्णित राम की निराशा वस्तुतः भारत की निराशा का ही प्रतिबिम्ब है। भारतवासी न्याय और धर्म पर आधारित होते हुए भी शक्तिहीन थे और विदेशी सत्ता अन्याय और अनीति की अनुगामिनी होते हुए भी रावण की भाँति शक्ति सम्पन्न थी। विदेशियों की शक्ति सम्पन्नता रह–रहकर भारतवासियों को खिन्न और मलिन हृदय बना देती थी। शक्तिपूजा में वर्णित राम के उद्‌गारों में वस्तुतः उस युग के भारतवासियों के उद्‌गार ही प्रतिध्वनित हो रहे हैंः–

मित्रवर विजय न होगी समर
अन्याय जिधर है उधर शक्ति
कहते छल–छल हो गये नयन
कुछ बूँद पुनः ढलके दृगजल। [12]

विभिन्न भावनाओं की उत्ताल तरंगों से आन्दोलित 'महाप्राण निराला' उस महासागर की तरह है जिसमें जीवन का विष भी है और अमृत भी। डॉ0 रामविलास शर्मा का कथन है कि ''जीवनद्रष्टा अनेक हुए हैं जीवन से निराश होकर मृत्यु का आमंत्रण करने वालों की भी कमी नहीं जो मृत्यु का सामना करके मृत्यु का वरण करते हैं, उन विरले साधकों में थे निराला।''[13]

विद्रोह की इस उगलती हुई आग के कारण ही निराला जी को 'गरलपान' कर नीलकण्ठ बनना पड़ा। भगीरथ मिश्र ने लिखा है कि– ''अपनी उग्र स्वच्छन्दता और फक्कड़पन में वे कबीर से तुलनीय हैं वैसे ही मस्तमौला, वैसी ही ललकार वैसा ही फक्कड़पना, वैसा ही क्रान्तिकारी स्वर और ही प्रगाढ़ तन्मयता। दोनों की ओजभरी वाणी रूढ़ियों और बन्धनों के विरोध में बेलगाम प्रहार करती रही। .....स्वाभिमान भी दोनों में ऊँची श्रेणी का था। अन्तर केवल इतना ही था कि एक सन्त पहले था और कवि बाद में और दूसरा कवि पहले सन्त बाद में। किन्तु निराला ने भी लुकाठा ले अपना घर जलाकर ही साहित्य रचा था।''[14]

'जागो फिर एक बार' में देशप्रेम के साथ–साथ कवि ने देश–दुर्दशा के प्रति अपार क्षोभ प्रकट किया है। भारतीय इतिहास के अतीत पृष्ठों की गौरवमयी कथाओं की ओर भारतवासियों का ध्यान आकर्षित करते हुए निराला कहते हैं– ''हे भारतवासी! तुम पशु नहीं हो, वीर हो, तुम निष्ठुर नहीं, वरन समर शूर हो। ऐसे वीरों की जन्मभूमि में आज गीदड़ों ने अधिकार कर लिया है – जाग्रत हो–

जागो फिर एक बार
पशु नहीं वीर तुम, समर–शूर क्रूर नहीं।
काल चक्र में हो बँधे आज तुम राजकुँवर
समर सरताज!
ग ग ग
तुम हो महान, तुम सदा ही महान
है नश्वर यह दीन भाव कायरता, कायपरता
ब्रह्म हो तुम अचरज यह भी नहीं है,

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 1, Issue 01, Jan 2018

पूरा यह विश्व भार, जागो फिर एक बार। [15]

निराला क्रान्तिकारी कवि थे। उनकी क्रान्ति का लक्ष्य था, ब्रिटिश साम्राज्यवाद से मुक्ति, जाति, वर्ण, धर्म आदि की सीमाएँ तोड़कर मानव–समानता के आधार पर रचा हुआ समाज। इसलिए कवियों और साहित्यकारों के अलावा राष्ट्रीय नेता भी उनसे चौकन्ने रहते थे।[16]

प्रगतिवादी कवि निराला क्रान्ति लाना चाहते हैं जो समाज के सारे शोषण और अन्ध रूढ़ियों को समाप्त कर दे। 'बादल राग' शीर्षक कविताओं में बादल शोषकों के विनाशक के रूप में प्रस्तुत हुआ है। निराला जी श्यामा का आह्वान करते हुए कहते हैं:–

एक बार बस और नाच तू श्यामा।
सामान सभी तैयार
कितने ही हैं असुर, चाहिए तुमको कितने हम
कल देखना मुण्डमालाओं के बनमन अभिराम
एक बार बस और नाच तू श्यामा। [17]

परम्परा और शोषित नारी के प्रति निराला जी की सहानुभूति रही है। निष्ठुर समाज ने विधवा की कितनी दयनीय दशा बना दी है। निम्न पंक्तियों में भारत की दलित विधवा का यथार्थ चित्र प्रस्तुत है:–

वह इष्टदेव के मन्दिर की पूजा–सी,
वह–दीप–शिखा–सी शान्त भाव में लीन
वह क्रूर काल ताण्डव की स्मृति–रेखा–सी
वह टूटे तरु की छूटी लता–सी दीन,
दलित भारत की विधवा है। [18]

वे सचमुच दूसरों का दु:ख नहीं देख सकते थे। पत्थर तोड़ती हुई श्रमिक नारी का चित्र खींचकर उन्होंने श्रमिक जनता के प्रति अपनी मार्मिक सहानुभूति का परिचय दिया था:–

वह तोड़ती पत्थर
देखा मैंने इलाहाबाद के पथ पर
चढ़ रही थी धूप
गर्मियों के दिन
दिन का तमतमाया रूप
उठी झुलसती हुई लू
रुई ज्यों जलती हुई भू
गर्द चिनगी छा गई,
प्रायः हुई दोपहर
वह तोड़ती पत्थर। [19]

निराला क्रान्तिकारी कवि हैं। शक्ति का उपासक कवि चुपचाप अन्याय कैसे सह सकता है? क्रान्तिकारी कवि निराला 'महाराज शिवाजी का पत्र' में ऐतिहासिक प्रसंग द्वारा गुलामी की जंजीर में जकड़े हुए राष्ट्र के प्रसुप्त संस्कार जगाते हैं:–

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 1, Issue 01, Jan 2018

आ रही है याद अपनी मरजाद की
चाहते हो यदि कुछ प्रतिकार
तुम रहते तलवार के म्यान में,
आओ वीर, स्वागत है,
सादर बुलाता हूँ।
हैं जो बहादुर समर के
वे मर के भी
माता को बचायेंगे
शत्रुओं के खून से
धो सके यदि एक भी तुम माँ का दाग
कितना अनुराग देशवासियों का पाओगे। [20]

निराला जी की कविताओं का जो विरोध हुआ, वह उनके दुःख का एक कारण बना, इसमें सन्देह नहीं। निराला जी ने जितना ही प्रकाशमय, आनन्दमय ब्रह्म का स्मरण किया, उतना ही यह संसार अन्धकारमय और उनका जीवन दुःखमय दिखाई दिया। निराला अपने दुःख के ही कवि नहीं है, वह मानवीय करुणा और सहानुभूति के कवि हैं। हिन्दी के व्यंग्यकारों में वे इसीलिए शीर्ष स्थान पर आसीन हैं क्योंकि उन्होंने समाज के नवनिर्माण की दिशा में वास्तविक स्थितियों का यथार्थ और सच्चा निरूपण किया है। मधु व बसन्ती के सुन्दर योग होने के साथ ही क्रान्ति व विद्रोह की धरा का समावेश यथार्थ भूमि पर आकर प्रतिष्ठित किया है। मद्य प्राण निराला की इस विद्रोहात्मक प्रवृत्ति ने लोगों के दिलों में क्रान्ति उत्पन्न कर दी, जिससे स्वतंत्र भारत का सपना साकार होता नजर आने लगा। क्रान्ति दृष्टा निराला अपनी विद्रोह और क्रान्ति भावना के कारण हिन्दी साहित्य में चिरस्मरणीय रहेंगे।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूचीः–

1. बादल राग, निराला, पृ0 154
2. कवि निराला, डॉ0 रामरतन भटनागर, पृ0 206
3. निराला–काव्य और व्यक्तित्व, प्रो0 धनंजय वर्मा, पृ0 177–178
4. निराला, डॉ0 रामविलास शर्मा, पृ0 110
5. कुकुरमुत्ता, निराला, पृ0 80
6. राम की शक्तिपूजा, निराला, पृ0 77
7. निराला, उषा यादव, पृ0 78
8. सरोज स्मृति, राम–विराग, पृ0 80
9. सरोज स्मृति, राम–विराग, पृ0 81
10. भिक्षुक, राग–विराग, पृ0 107
11. तुलसीदास, निराला, पृ0 84
12. राम की शक्तिपूजा, निराला, पृ0 79
13. निराला, डॉ0 रामविलास शर्मा, पृ0 192

14. निराला काव्य का अध्ययन, डॉ0 भगीरथ मिश्र, पृ0 31
15. जागो फिर एक बार, निराला, पृ0 178
16. निराला, डॉ0 रामविलास शर्मा, पृ0 176
17. एक बार बस नाच तू श्यामा
18. विधवा
19. वह तोड़ती पत्थर
20. शिवाजी का पत्र